फिल्मकार ऋत्विक घटक पर महत्वपूर्ण चर्चा और दो पुस्तकों का विमोचन

मुंबई, 12 अप्रैल 2026, ऋत्विक घटक (1925ङ्क1976) बांग्ला सिनेमा के उन महान फिल्मकारों में हैं जिन्होंने बंगाल विभाजन की पीड़ा, विस्थापन, शरणार्थी जीवन और सामाजिक विघटन को अपनी फिल्मों में गहरी संवेदना और वैचारिक तीक्ष्णता के साथ चित्रित किया। उनका सिनेमा यथार्थवाद, मेलोड्रामा, ब्रेख्तियन शैली, मिथकीय प्रतीक और अभिव्यक्तिवादी ध्वनि के अनोखे संयोजन के लिए जाना जाता है। उन्होंने केवल आठ फीचर फिल्में बनाईं, पर उनकी विभाजन त्रयी विशेष रूप से चर्चित रही।

जनवादी लेखक संघ एवं स्वर संगम फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में कल इंदिरा गाँधी हास्पिटल में स्थित विरुंगला केन्द्र, मीरा रोड में आयोजित कार्यक्रम में जाहिद खान एवं जयनारायण प्रसाद द्वारा संपादित पुस्तक 'ऋत्विक घटक : नव यथार्थवाद सिनेमा का कलात्मक सर्जक' का विमोचन हुआ। इसी अवसर पर जाहिद खान द्वारा अनुवादित कृष्ण चंदर का उर्दू नाटक 'दरवाजा खोल दो' (हिंदी अनुवाद) का भी विमोचन किया गया।

इस कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता पुलक चक्रवर्ती ने बताया कि, ऋत्विक घटक मार्क्सवादी विचारधारा से गहराई से प्रभावित थे। उन्होंने 1948 में भारतीय जन नाट्य संघ (IPTA) से जुड़कर अपनी सांस्कृतिक यात्रा शुरू की, जो उस समय भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआय) का सांस्कृतिक मोर्चा था। विभाजन, अकाल और सामाजिक अन्याय ने उन्हें मार्क्सवाद की ओर आकर्षित किया। वे आईपीटीए के सक्रिय सदस्य रहे, नाटक लिखे-निर्देशित किए और 1951 में पार्टी के लिए 'आँन द कल्चरल फ्रंट' नामक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किया, जिसमें उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी की सांस्कृतिक नीति पर जोर दिया कि कला को जनता की पीड़ा और आकांक्षाओं को व्यक्त करना चाहिए। हालांकि उनका जुड़ाव केवल संगठनात्मक नहीं था – वे सच्चे अर्थों में क्रांतिकारी कलाकार थे। मार्क्सवाद उनकी फिल्मों की रीढ़ बना रहा – उनकी रचनाएँ पूंजीवाद की विनाशकारी प्रवृत्तियों, वर्ग संघर्ष, विभाजन की त्रासदी और बौद्धिक संकट के खिलाफ निरंतर विद्रोह का रूप लेती रहीं। घटक ने कला के माध्यम से मानवता और सामाजिक न्याय के प्रति आजीवन प्रतिबद्धता निभाई।

उनकी प्रसिद्ध फिल्म मेघे ढाका तारा शरणार्थी परिवार की त्रासदी के माध्यम से स्त्री-त्याग और शोषण की मार्मिक कथा कहती है और उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। कोमल गांधार थिएटर आंदोलन और सांस्कृतिक पुनर्मिलन की आकांक्षा को राजनीतिक विभाजन के संदर्भ में प्रस्तुत करती है, जबकि सुवर्णरेखा विस्थापन, जाति-वर्ग और नैतिक संकट की दार्शनिक पड़ताल करती है। अजान्त्रिक में मनुष्य और मशीन के संबंध को प्रतीकात्मक ढंग से दिखाया गया है। बांग्लादेश में

बनी तितास एकटी नदीर नाम एक लुप्त होती नदी-सभ्यता की महाकाव्यात्मक कथा है, जबकि जुक्ति, तक्को आर गप्पो राजनीतिक बहस और बौद्धिक संकट पर आधारित अर्ध-आत्मकथात्मक फिल्म है। उनकी प्रारंभिक फिल्म नागरिक और बाड़ी थेके पालिए भी उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम में अनारकली ऑफ आरा और कागज-2 जैसी सामाजिक-राजनीतिक मुद्दे पर आधारित फिल्में, और रात बाकी है व शी नामक क्राइम-ड्रामा सीरीज़ बना चुके फिल्म निर्देशक अविनाश दास ने कहा, ऋत्विक घटक का सिनेमा सबसे ज्यादा ओरिजिनल सिनेमा है। उन्होंने सिनेमा का पूरा व्याकरण खड़ा किया है। उनका कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ाव केवल संगठनात्मक नहीं था, इसलिए जब उन्हें लगा कि वह इस संगठन के साथ बहुत दूर तक नहीं जा सकते, तो उन्होंने संगठन छोड़ दिया। अविनाश दास ने एक फिल्म डायरेक्टर की विवशताओं का जिक्र करते हुए बताया कि फिल्म बनाने में कितनी मशक्कत, चिरौरी और तानों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी के हवाले से कहा कि डायरेक्टर का जन्म अपमानित होने के लिए होता है। ऐसे में ऋत्विक घटक द्वारा अपनी शर्तों पर सिनेमा बनाना एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने मीरा रोड के स्वर संगम फाउंडेशन की तुलना कलकत्ता के उस सृजनात्मक माहौल से की, जिसमें ऋत्विक घटक और मृणाल सेन एक-दूसरे को सहयोग देते थे।

मुंबई विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व प्रोफेसर डॉ.हुबनाथ पांडे ने ऋत्विक घटक की फिल्मों को समझने के अपने शोध संस्मरण साझा किए और बताया कि बंगाली न समझने के बावजूद उन्होंने विजुअल्स के सहारे घटक की फिल्मों को देखा। उन्होंने 'खुद्दर' फिल्म में अमिताभ बच्चन के सीन का उदाहरण देकर परसानीफिकेशन की घटक की अनोखी अवधारणा पर प्रकाश डाला। डॉ. पांडेय ने हर महीने कम से कम एक फिल्म दिखाने की पेशकश की और कहा कि हमें फिल्में देखना सीखना होगा। उन्होंने फिल्म सोसाइटी की स्थापना की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा, बी. शांताराम की फिल्म सोसाइटी बंद हो चुकी है। इसकी शुरुआत मीरा रोड से की जा सकती है। मेरे पास दस हजार फिल्मों का संकलन है।

पुस्तक के संपादक जाहिद खान ने बताया कि हिंदी पट्टी में ऋत्विक घटक को मुख्यतः 'मधुमती' और 'मुसाफिर' जैसी फिल्मों के स्क्रिप्ट लेखन के लिए जाना जाता है, जबकि उनका नाम मृणाल सेन और सत्यजीत राय के साथ क्लासिकल डायरेक्टर के रूप में लिया जाता है। उन्होंने ऋत्विक घटक को मूल रूप से नाटककार बताया, जो आईपीटीए से जुड़े रहे और बाद में सिनेमा की ओर मुड़े क्योंकि सिनेमा के पास अधिक दर्शक थे। जाहिद खान ने कहा कि घटक कला के माध्यम से मानवता और मानवीय मूल्यों को क्षरण से बचाने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे। उन्होंने श्रोताओं से अपील की कि ऋत्विक घटक के पूरे व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ें।

जलेस के केन्द्रीय कमिटी सदस्य संजय भिसे ने कहा कि, ऋत्विक घटक का महत्व इस बात में है कि उन्होंने सिनेमा को मात्र मनोरंजन नहीं माना, बल्कि उसे इतिहास, राजनीति और मानवीय संवेदना का माध्यम बनाया। उनकी फिल्मों में विभाजन की त्रासदी निजी जीवन की कहानियों से जुड़कर व्यापक सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भ ग्रहण करती है। उन्होंने सिनेमा की भाषा को नए ढंग से गढ़ते हुए दर्द को विद्रोह और कविता में रूपांतरित किया, जिससे उनका सिनेमा आज भी गहरे प्रभाव के साथ याद किया जाता है। मराठी फिल्म उद्योग क्षेत्र से जुड़े कई लोगों ने अपने बच्चों के नाम ऋत्विक घटक से प्रभावित होकर ऋत्विक रखा है।

कलकत्ता से विशेष रूप से आए जयनारायण प्रसाद ने सत्यजीत राय, मृणाल सेन और ऋत्विक घटक के बीच के संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने 'मेघे ढाका तारा' फिल्म का विशेष उल्लेख किया और कहा कि विभाजन की पीड़ा और शरणार्थियों की समस्या को इस फिल्म में अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया गया है।

कार्यक्रम में रंगमंच और सिनेमा अभिनेता अजय रोहिल्ला ने ऋत्विक घटक के सिनेमा की स्ट्रांग विजुअल सेंस की तारीफ की। सिने पत्रकार हरि मृदुल ने बताया कि घटक बड़े कथाकार भी थे और उनकी कहानियों का अनुवाद 'संभावना प्रकाशन' से आया है। सिने जगत से जुड़े फरीद खान ने भी 'मेघ ढके तारा' का उल्लेख करते हुए ऋत्विक घटक को यथार्थवादी सिनेमा का महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बताया। हृदयेश मयंक, चेयरमैन, स्वर संगम फाउंडेशन एवं अध्यक्ष, विरुंगला केन्द्र, मीरा रोड ने बताया कि प्रो. हुबनाथ पांडेय के प्रस्ताव पर स्वर संगम फाउंडेशन शीघ्र ही कमेटी की बैठक बुलाकर फिल्म सोसाइटी संबंधी विचार करेगी। कार्यक्रम का संचालन रमन मिश्र ने किया। हरिसाद राय ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए इस समृद्ध करने वाला अनुभव बताया।

संजय भिसे/ हृदयेश मयंक, जनवादी लेखक संघ/स्वर संगम फाउंडेशन

सामूहिक रूप से सुना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उद्बोधन

आगर-मालवा। नारी सशक्तिकरण के संकल्प को साकार करने की दिशा में आज 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के समर्थन में आयोजित नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उद्बोधन को सामूहिक रूप से सुना गया। जिलाध्यक्ष ओम मालवीय विधायक मधु गहलोत जिला पंचायत अध्यक्ष मुन्नाबाई भैरूसिंह चौहान जिलाध्यक्ष महिला मोर्चा आभा अरोड़ा चोपड़ा की अध्यक्षता में मोदी के विचार को सुना गया ।मोदी के विचारों में स्पष्टता, संकल्प में दृढ़ता और महिलाओं के प्रति

सम्मान का भाव यह दर्शाता है कि आज का भारत नारी शक्ति को केवल प्रोत्साहित ही नहीं कर रहा, अपितु उसे राष्ट्र निर्माण की अग्रिम पंक्ति में स्थापित कर रहा है।

यह सम्मेलन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि उस बदलते भारत का प्रतीक है जहाँ महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में समान भागीदारी देने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। आज देश की बेटियाँ हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और क्षमता का परचम लहरा रही हैं–और यह सब एक सशक्त नेतृत्व, सकारात्मक सोच और दृढ़ नीतियों का परिणाम है। कार्यक्रम का संचालन महिला मोर्चा जिला महामंत्री साक्षी सकलेचा ने किया एवं आभार महिला मोर्चा जिला महामंत्री कविता जी शर्मा ने किया कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष संगीता देसाई, जिलामंत्री मीना स्वर्णकार आगर ग्रामीण मंडल अध्यक्ष रेखा यादव समाजसेवी शिरोमणि माहेश्वरी, सुधा मेठी, उमा शर्मा, विमला राजपूत,शोभा, सोयत नगर परिषद अध्यक्ष अनुराधा कुँवर ,रीना निलेश पटेल, विजयलक्ष्मी माली,आशा भावसार, सीया,पूनम , टमा, श्वेता शर्मा, संतोषी पालीवाल, ममता आदि बहनों ने रंगोली बनाकर उत्सव मनाते हुए सुना तथा 9667173333 पर मिस कॉल करके मोदी जी को बहनो ने समर्थन दिया।

अमेज़न ने भारत में ग्राहकों की सुरक्षा मजबूत करने के लिए काउंटरफीटक्राइम्स यूनिट लॉन्च की

भारत। आज अमेज़न ने भारत में अपनी काउंटरफीट क्राइम्स यूनिट (सीसीयू) शुरू की जिससे ग्राहकों और ब्रांड्स को नकली उत्पादों से सुरक्षित रखने की कंपनी की वैश्विक प्रतिबद्धता मजबूत होती है। इस यूनिट में अमेज़न के स्थानीय एक्सपर्ट भारतीय ब्रांड्स, सैलर्स और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ मिलकर काम करेंगे और नकली उत्पादों और फर्जी गतिविधियों से निपटकर भारत के तेजी से बढ़ते हुए ई-कॉमर्स सेक्टर में ग्राहकों का भरोसा मजबूत बनाएंगे। भारत में सीसीयू की शुरुआत बाजार की अखंडता को बनाए रखने और अमेज़न.इन पर ग्राहकों व सैलर्स को सुरक्षा प्रदान करने की अमेज़न की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती है। यह यूनिट नकली लिस्टिंग को खोजकर उसे हटाएगी, बौद्धिक संपदा की सुरक्षा करेगी और उद्योग संगठनों और सरकारी हितधारकों के सहयोग से गलत काम करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करेगी। यह पहल भारत में अमेज़न की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के अनुरूप है, जिसके अंतर्गत साल 2030 तक देश में कंपनी के बिज़नेस में 35 बिलियन डॉलर से अधिक निवेश करने की योजना है। अमेज़न की काउंटरफीट क्राइम्स यूनिट के डायरेक्टर, केभरू स्मिथ ने कहा, ''हमारे स्टोर में विश्वास स्थापित करने और सैलर्स को सुरक्षा देने के लिए ग्राहकों और ब्रांड्स को नकली वस्तुओं से बचाना बहुत जरूरी है। हमारे ग्लोबल एंटी-काउंटरफीटिंग के प्रयासों से लाखों डॉलर के नुकसान को रोकने में मदद मिल चुकी है। भारत में सीसीयू की शुरुआत के साथ हम अमेज़न.इन पर ग्राहकों, ब्रांड्स और सैलर्स को सुरक्षा देने की उसी प्रतिबद्धता और विशेषज्ञता के साथ काम करेंगे। हम आधुनिक टेक्नोलॉजी, समर्पित टीमों और ब्रांड्स एवं कानून प्रवर्तन संस्थाओं के साथ गहरी साझेदारी की मदद से भारत में जमीनी स्तर पर गलत काम करने वालों के खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे। इससे ग्राहकों, सैलर्स और ब्रांड्स के लिए एक सुरक्षित मार्केटप्लेस का निर्माण होगा।''

अमेज़न ने विश्व में ब्रांड सुरक्षा अभियानों में भारी निवेश किया है, जिसमें एडवांस्ड मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म, समर्पित जांच टीमों और सहयोगपूर्ण टूल्स तथा ब्रांड रजिस्ट्री प्रोग्राम में किया गया निवेश शामिल है। सीसीयू के माध्यम से अमेज़न.इन पर लिस्टेड सैलर्स और ब्रांड्स को ये क्षमताएं उपलब्ध हो सकेंगी। यह पहल भारत में अमेज़न द्वारा चलाए जा रहे मौजूदा ग्राहक सुरक्षा कार्यक्रमों को और अधिक मजबूत बनाएगी, जिनमें ऑनलाइन धोखाधड़ी और घोटालों एवाउट अमेज़न ब्लॉग'को रोकने के लिए इंडियन साईबरक्राईम कोऑर्डिनेशन सेंटर (आई4सी) के साथ साझेदारी में शुरू किया गया अभियान सस्कैमस्मार्टईंडिया शामिल है।

मेरे बाबूजी

आज स्मृति शेष बाबूजी का 42 वां पुण्य तिथि है। मैं उन्हें सपरिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूं।

...और आज ही अपने काव्यसंग्रह ‘काव्यांजलि’ पुस्तक को .... श्रद्धेय माई बाबूजी...को समर्पित भी किया है।

मेरे बाबूजी

मेरे बाबूजी जैसा कोई नहीं न इस लोक..... न उस लोक .....!

छः फीट के आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी मेरे बाबूजी .... विद्वान, धैर्यवान, खुशमिजाज सभी के सुख-दुख में साझीदार रहते वाले । बड़ी-बड़ी समस्याएं वे अपने उच्च विचार और समझदारी के बल पर चुटकी में सुलझा देते थे ।

वे हंसकर कहते ,‘कोई ऐसी समस्या नहीं जिसका समाधान न हो...!’

‘... और कोई ऐसा प्रश्न नहीं जिसका ... उत्तर न हो... !’

कितना सही था उनका कथन ...!

हम कितनी भी बड़ी मुसीबत में हों,हारी - बिमारी हो बाबू जी की बोली सुनते ही सब उड़नछू..!

बाबू जी की छत्र छाया वटवृक्ष के समान है जो अपने संतान को सांसारिक ताप, कष्टों से बचाव करता है।

मेरे बाबूजी चार भाई थे। सभी एक-से-बढ़कर?-एक ....! बल, विद्या, बुद्धि.. स्टेटस में। मेरे बाबूजी मंझले थे और उन्होंने अपने माता-पिता की सेवा उनकी आखिरी सांसों तक की।

सेवा भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी।।वे किसी भी स्थिति में न तो घबड़ाते ....न हर्षातिरेक में उछलते।

उनकी दुनिया सिर्फ अपनी पत्नी और बच्चों तक सीमित नहीं थी बल्कि भारी-भरकम संयुक्त परिवार पर भी उनका विशेष ध्यान रहता था। मेरे दादा जी ने बिहार के क?ई जिला स्कूल में प्रिंसिपल के गरिमामय पद को सुशोभित किया। अवकाश प्राप्ति के पश्चात् पैतृक गांव में रहना उन्हें रास आया। मेरे बाबूजी ने श्रवण कुमार के भांति पुत्र धर्म का निर्वहन किया।

उन्होंने गांव से ढाई कोस दूर प्रतिष्ठित सारण इंजीनियरिंग मिल मढ़ौरा में महत्वपूर्ण पद पर योगदान दिया। वहां रेलवे के पार्ट पूर्जा से लेकर क?ई प्रकार के लौह उपकरण का निर्माण होता था।वे रोज जाड़ा ,गर्मी,बरसात कोई मौसम हो नियमित रूप से हर्कुलस साईकिल से आते जाते।वे प्रात : काल साढ़े पांच बजे निकल जाते और संध्या छः बजे वापस लौटते। उसी साईकिल से मैंने भी साईकिल चलाना सीखा था।

दादा-दादी डायबिटीज के मरीज थे उन्हें नियमित इन्सुलिन देना, उनके खाने-पीने , मन-मिजाज का बखूबी ध्यान रखना अनुकरणीय है। नाते-रिश्तेदार, सामाजिक सम्बन्धों को निबाहना सबका आदर-सत्कार ,वर-विदाई माई बाबूजी हंसते-हंसते करते थे शायद उसी का कुछ असर हम भाई-बहनों पर भी पड़ा है... स्थिति को सुलझाने का प्रयास उलझाने का नहीं। बाबूजी के

चेहरे पर कभी भी कोई शिकन हमने नहीं? देखी ।

वे इतने सशक्त थे कि निराशा उनके सामने घुटने टेक देती थी।

मेरी तीसरी बड़ी दीदी के विवाह के पन्द्रह दिन ही बीते होंगे कि पूज्य दादाजी का स्वर्गवास हो गया। गांव वालों का कहना था कि ‘इनका दाह-संस्कार बड़े पुत्र को करना चाहिए... !’

संयोग वश बड़का बाबू जी ने भी अपने इकलौते बेटे की शादी दस दिन पहले की थी। अतः उनका पितृहृदय शुभ? -अशुभ के चक्रव्यूह में पड़ गया। पिता के दाह-संस्कार करने से हिचके।

धीर-गंभीर मेरे बाबूजी सहजता पूर्वक उठे; अपने पिताजी का अंतिम संस्कार विधिवत सम्पान पूर्वक किया। जबकि उन्होंने भी अपनी बिटिया की शादी पंद्रह दिनों पूर्व की थी।

‘जिन्दगी भर मैंने माता-पिता की निस्वार्थ सेवा की अतः यह जन्मदाता का विशेष आशीर्वाद है जो उन्होंने मुझे अपना अन्तिम संस्कार करने का सुअवसर दिया... मेरा अहो भाग्य....’!बाबूजी की सरलता से कही गई यह कथन मेरे मानस पटल पर आज भी अंकित है। उन्हें अपने बड़े भाई से कोई शिकायत नहीं।

गांव जवार उनके इस उदात्त चरित्र का कायल हो गया। मेरे बाबूजी ने कर्तृत्व परायनता के सामने खोखले अन्धविश्वास , परम्पराओं को धता बता दिया था ...सब देखते रह गए ।

आज भी यह घटना मेरे जीवन को प्रेरित करता है।जो सामने है उसका सामना कर अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने का नाम ही जिन्दगी है।

इलाके के प्रबुद्ध जन उन्हें,‘ लक्की मैन कहते थे ‘ शायद इसके पीछे पांच-पांच बेटियों को पढ़ा-लिखा उच्च संस्कार दे समय पर विवाह करना और सभी बेटियों को ससुराल में सम्मान मिलना। तीनों बेटों का उच्च पदों पर नियुक्ति, आज्ञाकारी होना और सभी को साथ लेकर चलना। नाती, पोता पोती का प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ना, मिलजुलकर संयुक्त परिवार के मर्यादा उसूलों का अनुपालन करना। ऐसे अनेक संस्मरण है कि अगर लिखा जाये तो महाग्रंथ बन जाये।

स्मृति शेष मेरे बाबूजी को शत् शत् नमन ?? उनका स्नेहाशीष हम पर ऐसे ही बरसता रहे ईश्वर से यही प्रार्थना है।,

-डॉ उर्मिला सिन्हा

आधुनिकता की दौड़ में मिथिलांचल की परंपरा बैसाख की संक्रांति

किरण काजल (बेंगलुरु)

आधुनिकता के इस दौड़ में भी मिथिलांचल के लोग अपनी परंपरा का बखूबी निर्वाह करते हैं।और ऐसे ही उनकी एक परंपरा अर्थात लोकपर्व का नाम हैं ।जुड़-शीतल जो की चैत माह के समाप्ति और बैसाख के शुरुआती दिन संक्रांति को मनाया जाता हैं।तो इस वर्ष यह त्योहार 15 तारीख को मनाया जा रहा है। और जुड़ शीतल से 1 दिन पहले 14 तारीख को सतवानी मनाया जाएगा।

जुड़-शीतल मिथिला के नव वर्ष का प्रतीक हैं और यह त्योहार खेतिहर किसानों से जुड़ा है इस दिन मिथिला के लोग एक दूसरे को गीली मिट्टी लगाकर नव वर्ष की बधाई देते हैं। और मिथिलांचल में यह त्योहार प्रयावरण संरक्षण की दृष्टि से भी विशेष महत्व रखता हैं। जहां एक तरफ इस दिन पुराने वृक्षों में पानी डालने का रिवाज हैं वहीं दूसरी तरफ नए वृक्ष लगाने का रिवाज है। वृक्षों से हमें प्राण रक्षण हेतु वायु मिलते हैं और वृक्ष कई सारी आपदाओं से भी हमारी सुरक्षा करते हैं। हमारी दैनिक जरूरतों की भी पुर्ति करती हैं।

जैसे वृक्ष हमें फल, फूल,साग, सब्जी, लकड़ी,छाया,हवा और बाढ़ को आने से रोकती है साथ ही वृक्ष का वर्षा होने में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी देती है।तो हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि हम भी अपने पर्यावरण का ध्यान रखें और वृक्षारोपण की ओर अपने साथ साथ औरों का भी ध्यान आकर्षित करें। तो यह त्योहार पर्यावरण के संरक्षण को भी दर्शाता है। जुड़ शीतल के दिन गुड़-सत्तु और ऋतुफल के साथ जल से भरे घड़े का भी दान किया जाता हैं। ऐसी मान्यता है कि आज के दिन गुड़ सत्तु और जल से भरे पात्र का दान करने से मरणोपरांत उत्तम लोक में स्थान प्राप्त होता है।जुड़-शीतल से एक दिन पहले सतुआनी मनाया जाता हैं। जिसमें सत्तु खाना अनिवार्य होता है।सत्तु शरीर की तपिश को दूर कर शीतलता प्रदान करती है। सत्तु काफी आरोग्यवर्धक भी होता हैं! हमारे मिथिलांचल में सतुआनी के दिन अपने कुलदेवी देवता और ईष्ट देव को भी गुड़ और सत्तु का भोग लगाया जाता है। सत्तुआनी के दिन ही मिट्टी के पात्र में जल भर कर रखा जाता हैं और जुड़-शीतल के दिन बड़े लोग (खास कर स्त्रियां)अपने से छोटों के माथे पर आशीष स्वरूप ये बासी जल डालती हैं और उनके जीवन की मंगल कामना करते हुए कहती हैं।जुड़ल-रहूँ...

सवेरे सवेरे यह शब्द सुनकर और माथे पर शीतल जल का अनुभव कर मन आनंद विभोर हो उठता है। कितना अद्भुत यह संसार है सोच कर हृदय गद गद हो उठता है। हर एक रीति रिवाज यहां खुशियों का संचार करता है। पावन पवित्र यह स्थल बड़े भाग्य से मिलता है। जुड़ शीतल के दिन बहने बाट पटाती हैं।अर्थात लड़कियां सड़क पे जल का छिड़काऊँ करते हुए मन ही मन एक मंत्र पढ़ती हैं।

मंत्र इस प्रकार है : -भैया के बाट पटबैय छी!

पहले अपने भाई का नाम लेती है और फिर ये मंत्र पढ़ती है। इस तरह बाट पटाने से तात्पर्य है बहनों का अपने भाइयों के प्रति अथाह स्नेह का भाव को दर्शाती है।जो अगर उनके भाई राह पर चले तो राह के धूल कण उड़ कर उनकी आंखों में ना चला जाए! इसलिए तो बहने सुबह सवेरे बाट पर जल का छिड़काव करती है। आज के दिन तो मिथिलांचल के हर घर में बड़ी-भात बनता है और लोग अपने ईश को अर्पन कर प्रसाद स्वरूप बड़ी भात खाते हैं ।मिथिलांचल में आज चुल्हा नहीं जलाया जाता हैं। अर्थात जुड़ शीतल के दिन चूल्हे का 1 दिन का लौंकडाउन रहता है। जिससे दूल्हे में भी शीतलता आती है।

सतुआनी के दिन ही अधिक मात्रा में भोजन पकाया जाता हैं और वही जुड़शीतल के दिन भी खाया जाता हैं। तुलसी और शिवालयों में पनीशला की स्थापना की जाती हैं। जो जल संरक्षण की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। क्योंकि गर्मी के दिनों में विशेष रुप से पानी का अभाव हो जाता है। जिससे कई बार बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। तो अगर हम जल सचित करके रखते हैं तो कई सारी समस्याओं से हम अपना बचाव स्वयं कर सकते हैं। जैसे ग्रामीण इलाकों में गर्मी के दिनों में अकस्मात ही आग का लगना इत्यादि..... तो अगर हम पानी सचित करके रखते हैं तो उस आग पर काफी हद तक काबू पा सकते हैं वगैरह वगैरह...

सत्तु बनाने और खाने की विधि- सत्तु स्वास्थ्य वर्धक पौष्टिक आहार है जिसे बनाना थोड़ा सा मुश्किल पर फायदे हजार हैं। जुड़ शीतल के इस पावन त्यौहार में सत्तु का कितना महत्व है यह तो आप सभी जान ही चुके हैं तो आइए अब सत्तु बनाना और खाना बताते हैं आप सभी को पहली बैसाखी के दिन हमारे बिहार में तो देवी देवताओं को भी गुड़ और सत्तु का भोग चढ़ाया जाता है। क्रांटिटी आप अपने हिसाब से रख सकते हैं। सबसे पहले पानी को अच्छी तरह उबाल लेंगे और आंच को धीमा कर देंगे अब इस उबलते हुए पानी में चने की दाल डाल कर अच्छी तरह से मिला देंगे और मिलाते हुए ही पांच मिनट तक तेज आंच पर दाल पकने दे। पांच मिनट हो जाने के बाद दाल को आंच से उतार लें और किसी बड़े जालीदार बर्तन में सावधानी पूर्वक दाल निकाल लें।पानी निकल जाने के बाद इस दाल को धूप में किसी पतले कपड़े पर फैला दे ताकी ये चना दाल अच्छी तरह और जल्दी सुख जाए। जब आपको लगे की दाल सुख गया है तो एक दाना अपने दांत के नीचे डाले और चबा कर देखे अगर खट्ट का आवाज़ हुआ मतलब दाल बिल्कुल तैयार है।अब इस दाल को कड़ाही में थोड़ा थोड़ा डालकर मध्यम आंच पर हल्का सुनहरा होने तक भूनें आप देखेंगे कि थोड़ी ही देर में दाल से सोंधी सोंधी खुशबू आने लगती है तो अब आपका दाल पूरी तरह तैयार है सत्तु बनने के लिए। जब ये दाल ठंडा हो जाए तो इसे आटे पिसने वाली चक्की मशीन में पीसा कर दाल का आटा बनवा लें। लीजिए बिना किसी मिलावट के बड़ी ही आसानी से मार्केट से कम कीमत पर शुद्ध शाकाहारी सत्तु बन कर तैयार है। अब बात आती है सत्तु खाने की तो सत्तु खाने का सबसे आसान तरीका है आपकी मर्जी के अनुसार सत्तु आप जैसे चाहे खाएं किसी भी तरह से सत्तु खाएं फायदा ही होगा। आप चाहें तो सत्तु के पराठे बना कर खाएं, लिट्टी बना कर खाएं या फिर आप सत्तु पी भी सकतें हैं। एक तो एक ग्लास ठंडे पानी में दो या चार चम्मच सत्तु डाल कर एक चुटकी भूना जीरा पाउडर, एक चुटकी काला नमक और एक चम्मच नींबू का रस सभी को अच्छे से मिला कर पिएं इससे शरीर की तपिश दूर होती है

दूसरा एक ग्लास पानी में दो या चार चम्मच सत्तु डाले और दो चम्मच चीनी मीठा आप अपने हिसाब से रख सकते है। और हा चीनी की जगह गुड़ ,शहद या फिर आप अपने पसंद से मीठे के लिए कुछ भी डाल सकते हैं।सभी को मिला कर पिएं बहुत फायदेमंद होता है। तिसरा एक और तरीका है सत्तु खाने का। एक कटोरी में चार चम्मच सत्तु लें और अब इस में दस दाना किसमिस , पांच दाना काजू-बादाम और आधा गिलास दूध मीठे के लिए आप चीनी, गुड़ या फिर शहद ले सकते हैं सभी सामग्री को कटोरे में डाल कर अच्छी तरह मिला लें अगर आवश्यकता हो तो और दुध या फिर कम की जरूरत हो तो कम ही डाले सभी को मिलाकर एक अच्छा पेस्ट तैयार करें और अब इसे खाएं बहुत बहुत बहुत स्वादिष्ट लगता है।